Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

"कहानी को छोटी मुँह बड़ी बात कहनेवाले नामवर जी की आलोचना।"

डॉ.एम.अब्दुल रजाक
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
क्रिस्तु जयंती महाविद्यालय (स्वायत्त)
के- नारायणपुरा, कोतानूर पोस्ट,
बेंगलूरु, पिन-560077

सारांश:
कहानी आलोचना की परंपरा विकसित होते हुए नई कहानी के दौर में सशक्त एवं सक्रिया होते हुए अनेक आंदोलन एवं विमर्शों को जन्म देती है। लेकिन ऐसा माना जाता है कि हिंदी कहानी की आलोचना का सही मायने में नई कहानी के दौर में ही शुरूआत होता है। जहाँ तक लगता है कि नई कहानी के दौर में नई कहानी पर चिंतन करनेवाले दो सक्रिया आलोचक हुए हैं ,उनमें एक डॉ.देवीशंकर अवस्थी दूसरे और दूसरे आचार्य नामवर सिंह है।
बीज शब्द: *कहानी, आलोचना, परंपरा, विकास, विधा*

शोध विस्तार

> 'दुनिया को बदलने के लिए लेखक अपनी कहानी की दुनिया बदल देता है, दुनिया के नियमों को तोडने के लिए लेखक अपनी दुनिया को दूसरे नियमों से बनाता है।
>
> **आचार्य नामवर सिंह**

कहानी की विधा भारत की देन है। यह विधा बहुत पुरानी है, यह कहानी उपनिषदों, पंचतंत्र और हितोपदेशों में भी है। इन ही के माध्यम से वह विदेशों में फैली और विकसित होते हुए अलग-अलग रूपों में धरकर लोक मन में बस गई। इस बात को कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आधुनिक कहानी को विदेशों से प्राप्त किया है। यह कहानी आगे बढ़ती हुई विविध रूपों में तब्दील होती गई है। ज्यों-ज्यों कहानी आगे बढ़ती गई त्यों-त्यों उस पर चिंतन करना प्रारंभ होता गया है। आधुनिकता मूल्य बोधक होती है आधुनिकता के मूल्यों में विवेक एक है। विवेक एवं संवेदना के योग का नाम ही आलोचना है। आलोचना का संबंध मूलतः विवेक से होता है। आलोचना में विवेक के आधार पर कृति का मूल्यांकन किया जाता है। आलोचना के विवेक को अर्जित और विकसित करने वाले समर्थ आलोचकों में एक थे आचार्य नामवर सिंह।

आचार्य नामवर सिंह की कहानी आलोचना पर विचार करने से पहले कहानी आलोचना की परंपरा बोध पर विचार एवं विश्लेषण करना बहुत जरूरी है। यदि बगैर परंपरा बोध के मानने योग्य

आलोचना नहीं बन सकती, अगर कही बन भी जाए तो उसमें कहीं न कही गुणवत्ता की कमी दिखाई पड़ती है इससे बचने के लिए परंपरा बोध का होना अनिवार्य है।

हिंदी कहानी आलोचना की परंपरा बोध पर प्रकाशडाला जाए तो जाहिर है कि सन् 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इंदुमति' कहानी को हिंदी का प्रथम कहानी के रूप में माना जाता है। हिंदी कहानी के प्रथम आलोचना पर कई सारे मत भेद है। जाहिर सी बात है कि कौन से मान एवं प्रतिमान होंगे ? इन्हीं करण से ऐसा हुआ है। लेकिन आगे कालांतर में भारतेन्दु काल के प्रसिद्ध आलोचनक पंडित बालकृष्ण भट्ट ने सबसे पहले साहित्य की एक परिभाषा दिया था और उसी परिभाषा के तहत साहित्य का चिंतन एवं मानदंड तय भी किया गया था। उनका माननता था कि 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है'। उन्हीं मान एवं प्रतिमान के तहत साहित्य का चिंतन भी किया है। यहाँ आधुनिक काल (1900) में कई सारे बदलाव हुए है। आधुनिक काल का संपूर्ण साहित्य राजाश्रय से जनाश्रय के साथ जुड़ने के लिए मजबूर होता है। यह आधुनिक साहित्य की देन है। यहाँ स्थिति ऐसी हो गई जो असाधारण पर साधारण की विजय है, और अलौकिकता पर लौकिकता की जीत है।

भट्ट जी ने सही कहा था कि कमल को जिस तरह सूर्य की आवश्यकता होती हैं उसी प्रकार साहित्य के जन समूह के लिए आधुनिकता की जरूरत होती हैं। भट्ट जी आगे लिखते है–"जैसे कमल को अपने विकास के लिए सूर्य की आवश्यकता है, वैसे ही सभ्यता को अपने विकास के लिए साहित्य की आवश्यकता है और सभ्यता का असर जितना अधिक देश के साहित्य पर पड़ता है और चिरस्थाई रहता हैं उतना किसी दूसरी बात पर नहीं। बिना साहित्य के सभ्यता वैसी ही फीकी है जैसे बिना नोन के भोजन।"[1] भट्ट जी का प्रभाव आगे कालांतर में प्रेमचंद के कथा साहित्य में झलकता है।

प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य एवं कथा आलोचना के माध्यम से जासूसी, ऐयारी एवं कल्पना के स्थान पर सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़ देते है। प्रेमचंद ने कथा साहित्य का सृजन करने साथ-साथ कथा साहित्य पर चिंतन भी किया है। आगे वे लिखते हैं कि-"जहाँ आनंद है, वहीं सत्य है। साहित्य काल्पनिक वस्तु है पर उसका प्रधान गुण है आनंद प्रदान करना, और इसलिए वह सत्य है। मनुष्य ने जगत् में जो कुछ सत्य और सुंदर पाया है और पा रहा है, उसी को साहित्य कहते हैं और कहानी भी साहित्य एक भाग है।"[2]प्रेमचंद सिर्फ कथा साहित्य में नहीं कथा साहित्य के चिंतन में भी यथार्थ को अधिक महत्व दिया है, वे कहानी को जीवन का यथार्थ मानते हुए लिखते है-"मगर यह समझना भूल होगा कि कहानी जीवन का यथार्थ चित्र है। यथार्थ जीवन का चित्र तो मनुष्य स्वयं हो सकता है, मगर कहानी के पात्रों के सुख-दुख से हम जितना प्रभावित होते है उतना यथार्थ जीवन से नहीं होते-जब तक वह निजत्व की परिधि में न आ जाय। कहानियों में पात्रों से हमें एक ही दो मिनट के परिचय में निजत्व हो जाता है और हम उनके साथ हँसने और रोने लगते हैं। उनका हर्ष और विषाद हमारा अपना हर्ष और विषाद हो जाता है।"[3] प्रेमचंद जी मानते हैं कि कहानी की गतिशीलता को जीवन की घटनाएँ प्रभावित नहीं करती बल्कि पात्र उसको प्रभावित करते हैं। पात्र अगर गतिशील होगा तो कहानी भी खुद-ब-खुद

गतिशील होगी। वे कहानी की वास्तविकता की तलाश करते हुए उसके पात्रों के चरित्र को अधिक महत्व देते हैं। इससे झलगता है कि प्रेमचंद की आलोचना में आदार्शोन्मुक यथार्थावाद की दृष्टि नजर आती है।

हिंदी कहानी पर चिंतन करने की परंपरा आगे विकसित होते हुए प्रेमचंद से जैनेन्द्र कुमार तक फैल जाती है। जैनेन्द्र ने भी कथा साहित्य का सृजन करने के साथ-साथ कथा आलोचना पर चिंतन किया है। जैनेन्द्र कुमार ने प्रेमचंद की आलोचना दृष्टि को बरकरार रखते हुए मानते हैं कि कहानी जीवन के आरंभ से आज तक कहानी का एक ही उद्देश्य रहा है, जीवन के उपकरणों द्वारा अपने को व्यक्त करन रहा है। यहाँ अनुभूति की आवश्यकता होना बहुत जरूरी है। वही कहानी अधिक सफल मानी जाती जिस में जीवन की मार्मिकता को दर्शाते हुए, सत्य एवं यथार्थ का बोध से जुडे हुए है। उसमें भी सबसे ज्यादा कहानी के पात्रों एवं चरित्र का अधिक महत्व है। जैनेन्द्र कुमार लिखते हैं कि-"अपने चुनाव में मेरा मन कहानी पर ही रहा है, उनकी विधाओं और उपकरणों पर नहीं। उपकरणों पर बल देनेवाली बोध दे सकती है रस नहीं देती। और रस न दे, उसे कहानी किस हिम्मत से कहा जाय।"[4] अर्थात् जैनेन्द्र कुमार मानते हैं कि कहानी में बोध (समझ) एवं रस दोनों का होनी जरूरी समझा है। यहाँ जैनेन्द्र की आलोचना में प्रेमचंद की दृष्टि से देखा जा सकता। वे बोध को आदर्शवाद और रस को यथार्थवाद से जुडते हैं। इस बात को कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि जैनेंन्द्र ने प्रेमचंद से सहमत होते हुए उनकी परंपरा को आगे बढ़ाया है।

दरअसल कहानी आलोचना की परंपरा विकसित होते हुए आगे कालातंर में 1960 के दशक तक पहुँचती है। इस काल के कहानी ने उस समय के दौर में अनेक कहानी आंदोलन को जन्म देती है। तदुपरांत कहानी आंदोलन विकसित होते हुए सशक्त एवं सक्रिया धारण कर लेती है। उसमें नई कहानी, सचेतन कहानी, अ-कहानी, समांतर कहानी, जनवादी कहानी, समकालीन कहानी आदि है। इन कहानी आंदोलन के समय अनेक आलोचक कहानी के मान एवं प्रतिमानों को लेकर उभर कर सामने आए है। उनमें ऩामवर सिंह भी एक है। नामवर जी की कहानी की आलोचना शुरू करने से पहले 'आलोचना के मान' में शिवदान सिंह चौहान ने आलोचना की एक गूढ़ बात को प्रस्तुत किया है जो कि हर आलोचक को सुनने एवं अपनाने के लिए मजबूर करता है।

वास्तव में आलोचना के संदर्भ में शिवराज सिंह चौहान ने बड़ी मार्मिक बात कही है कि- "आलोचक साहित्य मंदिर का द्वारपाल होता है।"[5] आलोचक अगर द्वारपाल है तो साहित्य मंदिर की रक्षा के साथ-साथ कोई गलत प्रवृत्ति उसमें प्रवेश न करें, यह जिम्मेदारी भी उस पर होती है। आलोचना साहित्य मंदिर की रक्षा करती है, उसकी पूजा नहीं करती है। अगर पूजा होगी तो न्याय और सत्य नहीं होगा।

कहानी आलोचना की परंपरा विकसित होते हुए नई कहानी के दौर में सशक्त एवं सक्रिया होते हुए अनेक आंदोलन एवं विमर्शों को जन्म देती है। लेकिन ऐसा माना जाता है कि हिंदी कहानी की आलोचना का सही मायने में नई कहानी के दौर में ही शुरूआत होता है। जहाँ तक लगता है कि नई कहानी के दौर में नई कहानी पर चिंतन करनेवाले दो सक्रिया आलोचक हुए हैं ,उनमें एक डॉ.देवीशंकर अवस्थी दूसरे और दूसरे आचार्य नामवर सिंह है। नामवर जी कहानी समीक्षा को सहयोगी प्रयास के रूप में शुरू करते हुए कहते है कि आज की हिंदी कहानी के रूप में जरूर तब्दील हुई है। जैसे कवियों की तरह कहानीकारों ने भी शिल्प को लेकर नए प्रयोग करने की प्रवृत्ति को अपनाया है। लेकिन नामवर जी ऐसा मानते हैं कि यह प्रवृत्ति सिर्फ प्रयोग करने के लिए लिखी गई है। आगे कहानी एवं नई कहानी में भेद करते हुए लिखते है कि-"जो छोटी-सी बात पुराने कहानीकारों के लिए अपर्याप्त थी, उसी को नये कहानीकारों ने कहानी के लिये पर्याप्त मान लिया है और फिर उसके भीतर से उन्होनें कहानी के कथानक की विभिन्न सिम्तों का विकास किया है। इसी दिशा में नया कहानीकार कभी-कभी इतना अंतर्गूढ होता है कि बातों में से बात का यह निकालते जाना ही इतना मनोरंजक होता है कि एक कहानी बनजाती है। परंतु यह कौशल वही दिखा सकता है, जिस के पास बातचीत करने की उत्कृष्ट कला हो और साथ ही भाषा की बरीकियाँ भी।"[6] यहाँ नामवर जी मानते हैं कि पुराने कहानीकार के लिए जो चीज महत्व नहीं है लेकिन वहीं चीज नये कहानीकार के अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है। वे कहानी के लिए कुशलता, बौद्धिकता के साथ भाषा की भी ज्ञान होना जरूरी मानते हैं।

नामवर जी कहानी आलोचना में घटना प्रसंग पर चिंतन करते हुए बहुत खेद प्रकट करते हैं। वे खास कर कहानीकारों में सामाजिक दृष्टि कमी के कारण ऐसी कृतियाँ खोखले बनते जा रहे हैं। यह कहानीकारों की कमजोरी समझते हैं। वे कहानी की सफलता पर विचार करते हुए लिखते हैं कि लोक जीवन का मुग्ध एवं मार्मिक रूप बताना अपने आप में बहुत बड़ा गुण होता है, वह गुण तो मात्र अनुभवी कहानीकारों में उपलब्ध होता है। कहानी के सृजन में सामाजिक दृष्टि के साथा घटना प्रसंग तथा जीवन की वास्तविकता को चित्रण करने की क्षमता होना चाहिए। आगे नामवर जी लिखते हैं कि-"यह साभिप्राय घटना- प्रसंग सर्वथा कल्पित अथवा अविश्वसनीय भी हो सकता है और अत्यंत वास्तविक भी। घटना–प्रसंग जितना ही वास्तविक होगा, कहानी उतनी ही जोरदार होगी।"[7] यहाँ नामवर जी कहानीकार में वास्तविक जीवन की अनुभूति एवं वास्तविक जीवन संघर्ष को ग्रहण करने की क्षमता आवश्यक मानते हैं। यदि मुक्तिबोध की बातों में कहा जाए सही होगा, वे लिखते हैं कि 'जीवन विवेक ही साहित्य का विवेक हैं।' नामवर जी के विचारों से लगता हैं कि कौनसी बात पाठको समझ में आ जाएगी और कौनसी बात पाठकों को समझाना है इसका ध्यान वही रखता है जिनके पास जीवन के अनुभूतियों को ग्रहण करने की क्षमता होता है। वही कहानीकार आगे कालांतर में कहानी के सृजन में सफल होगा।

नामवर जी कहानी की सफलता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि यह कहानी का दुर्भाग्य है कि कहानी को मनोरंजन के रूप में पढ़ी जाती और शिल्प के रुप में आलोचना किया जाता है। नामवर जी लिखते है-"छोटी मँह बड़ी बात कहने वाली कहानी के बारे में प्रायः बड़े मुँह छोटी बात कही जाती है। कहानी का यह दुर्भाग्य है कि वह मनोरंजन के रूप में पढ़ी जाती है और शिल्प के रूप में आलोचना होती है। मनोरंजन उसकी सफलता है तो शिल्प उसकी सार्थाकता ! कहानी में अनेक आलोचकों को दिलचस्पी इतनी ही है कि वह साहित्य का एक रूप है।"[8] इससे जाहिर होता है कि शास्त्रीय आलोचक कहानी को केवल साहित्य का रूप मानते हैं तो मूल्यवादी आलोचक जीवन की सार्थकता अनुभूतियों के लिए असमर्थ मानते हैं। नामवर जी कहना हैं कि जहाँ तक संभव है जीवन के लघु प्रसंग को लेकर लिखी जाने वाली कहानियँ,स्वयं भी लघु समझी जाती है। अंत में उपर्युक्त उद्धरण से वे मानते हैं कि व्यापक जीवन दृष्टि रखने वाले स्वभाव से कहानी जैसे विधा को छोटी चीज समझ कर उन्हें नजर अंदाज किया जाता है।

नामवर जी नई कहानी की सार्थकत पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि-"कहानी में जब मैं सार्थकता की बात करता हूँ तो इसका यह अर्थ है कि कहानी हमारे जीवन की छोटी-से-छोटी घटना में भी अर्थ खोज लेती है या उसे अर्थ प्रदान कर देती है।"[9] यहाँ नामवर जी नई कहानी की सफलता छोटी घटना से होता मानते है। पुरानी कहानीकारों के लिए जो घटना निरार्थ होता है लेकिन वही घटना नई कहानीकारों के लिए सार्थक हो जाता है। वे मानते हैं कि वही कहानीकार सफल एवं सार्थक माना जाता है जो कि जीवन की हर छोटी घटना के भीतर से संपूर्ण जीवन की सार्थकता अनुभव करता है।

दरअसल नामवर जी आज की हिंदी कहानी की भाषा पर प्रकाश डालते हुए लिखते है कि- "भाषा इधर की कहानियों की काफी बदली है, यह कह सकते है कि माँजी है। यहाँ तक कि हिंदी गद्य का अत्यंत निखरा हुआ रूप आज की कहानियों में ही सबसे अधिक मिलता है। कहानी में एक भी फालतू शब्द न आये, इसके प्रति आज का लेखक बहुत सतर्क है और शुभ लक्षण है।"[10] इसके माध्यम से नामवर जी यह मानते हैं कि आज के कहानीकार के लेखन में हर शब्द किसी न किसी अर्थ को समझाता है और कोई भी शब्द पालतू नहीं है। यह स्थिति आधुनिकता के साथ हर मनुष्य के जीवन शैली की फितरत बन गयी है। उसी का रूप आज के लेखकों के लेखन में भी झलकता है। समकालीन समाज में जैसे मनुष्य कहानी को पढ़ने के लिए जाता है तो सोचता है कि कम समय में ज्यादा ज्ञान हासिल हो जाए, वैसे ही आज लेखकों के सृजन में दिखाई पड़ता हैं, जैसे कोई भी शब्द बेकार नहीं होना चाहिए उस में कुछ न कुछ भाव होना अनिवार्य समझते हैं।

हिंदी कहानी की आलोचना करते समय कला एवं भाषा पर विशेष रूप से ध्यान रहना अत्यंत आवश्यक हैं, नामवर जी आगे लिखते हैं कि-"नई कहानी को कहानी-कला की अपनी विशेषता के साथ ही संपूर्ण साहित्य के मान और मूल्यों के संदर्भ में देखने की आवश्यकता है और इस के लिए कहानी समीक्षा की एक व्यापक निश्चित भाषा का भी निर्धारण होना चाहिए। मेरी अपनी सीमा यह है कि

मैं अब तक मुख्यताः काव्य का पाठक रहा हूँ। कहानियाँ मैंने कम पढ़ी हैं और उनमें अंतर्निहित सत्य को समझने और व्यक्त करने की भाषा भी अब तक नहीं तय कर पाया हूँ।"[11] इससे झलकता है कि नामवर जी कहानी की कला में मूल्यों एवं भाषा पर अधिक बल देते हैं।

आचार्य नामवर सिंह की कहानी की दृष्टि पर चिंतन किया जाए तो मुझे हिंदी के आलोचक डॉ.अभिषेक रौशन की पंक्तियाँ याद आती है वे लिखते हैं कि-"किसी रचना का सामाजिक आधार क्या है, उसकी सृजन के स्त्रोत क्या हैं, उसमें कौन-सी जीवन-दृष्टि निहित है, उसकी भाषा कैसी है, इन प्रश्नों से टकराकर ही आलोचना सही मायने में रचना में अर्थ का संधान कर सकता है। और आलोचना का दायित्व है कि रचना घटनाओं, चरित्रों के माध्यम से व्यक्त विचारधारा को व्याख्यायित करे।"[12] इस दृष्टि से देखा जाए तो आचार्य नामवर सिंह ने कहानी की आलोचना करते हुए उपर्युक्त दर्शाए गये सारे पहुलुओं पर विचार विश्लेषण किए हैं। अगर गहराई के साथ देखा जाए तो उन में मार्क्सवादी विचारधारा की दृष्टि देखाई पड़ती है। नामवर जी ने अपने आलोचनात्मक विवेक से हिंदी कहानी आलोचना को मजबूत आधार प्रदान किया है, जो कि उनकी कहानीः नई कहानी नामक आलोचनात्क कृति के माध्यम से हिंदी कहानी आलोचना के इतिहास में नए और अर्थवान अध्याय को जोड़ते है। अंततः लेखक एवं आलोचक के बीच के संबंध को दर्शाते हुए लिखा है, नामवर जी एक अन्य कवि के शब्दों में कहा हैं कि When me they fly I am their wings.(जब वे उड़ते हैं तो मैं उनका पंख होता हूँ) समकालीन आलोचना में यही दृष्टि देखने को मिलती है।

दूरभाषा-9493405942, abdulrajak@kristujayanti.com

संदर्भ

[1]. पंडित बालकृष्ण भट्ट- हिंदी प्रदीप पत्रिका , नवंबर- दिसंबर ,1900, पृ सं-18
[2]. संपादक सत्य प्रकाश मिश्र- प्रेमचंद के श्रेष्ठ निबंध, पृ सं-102
[3]. संपादक सत्य प्रकाश मिश्र- प्रेमचंद के श्रेष्ठ निबंध, पृ सं-103
[4]. संपादित जैनेद्र कुमार- हिंदी 23 कहानियाँ भूमिका (साहित्य अकादमी की ओर से)पृ सं-10
[5]. शिवदान सिंह चौहान- आराधना के मान, पृ सं -44
[6]. नामवर सिंह- कहानी नई कहानी, पृ सं-14
[7]. नामवर सिंह- कहानी नई कहानी, पृ सं-15
[8]. नामवर सिंह- कहानी नई कहानी, पृ सं-18
[9]. नामवर सिंह- कहानी नई कहानी, पृ सं-26
[10]. नामवर सिंह- कहानी नई कहानी, पृ सं-16
[11]. प्रो. नामवर सिंह- पहल पत्रिका, कहानी -नववर्षांक1958- पृ सं-36
[12]. डॉ.अभिषेक रौशन- बालकृष्ण भट्ट और आधुनिक हिंदी आलोचना का आरांभ, पृ सं-22,24